International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारत में राजनीतिक विकास

Political Development in India

गोपाल प्रसाद[1], यादव आकाश जयप्रकाश[2], विशाल गपुता[3], राकेश वरुण[4]

[1]प्रोफ़ेसर, राजनीति विज्ञान विभाग दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर
[2,3,4]परास्नातक छात्र (2024-24), राजनीति विज्ञान विभाग दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर

सारांश

भारत में राजनीतिक विकास की प्रक्रिया औपनिवेशिक शासनकाल से ही वर्तमान की यात्रा को समाहित किए हुए हैं। भारत का राजनीतिक विकास स्वाधीनता के बाद लोकतान्त्रिक संविधान को अपने से चिन्हित है, जिसने शासन के मूलभूत सिद्धांतों को राजनीतिक विकास के रूप में स्थापित किया। इतनी लंबी अवधि के दरमियान स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव, बहुदलीय प्रणाली और विविध क्षेत्रीय, धार्मिक विभिन्नताओं को समायोजित करने वाली संघीय संरचना वाली लोकतांत्रिक संस्थाएं शामिल हैं। महत्वपूर्ण राजनीतिक विकास के साथ भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रीयवाद, किसान आंदोलन, सामाजिक-आर्थिक विषमताए और आरक्षण जैसी चुनौतियां बनी हुई है, जो लोकतांत्रिक शासन को मजबूत करने और समावेशी विकास को बढ़ावा देने की निरंतर आवश्यकता को रेखांकित करती हैं। इस शोध के माध्यम से भारत की राजनीतिक विकास प्रक्रिया पर प्रकाश डाला गया है। जो कि वर्तमान में दक्षिण-एशियाई देशों के संदर्भ में भारत की (तीसरी दुनिया)के विकासशील देशों में उसके राजनीतिक विकास को समझने के लिए तैयार की गई है।

मुख्य शब्दावली : राजनीतिक विकास, लोकतांत्रिक संस्थाएं, संघीय संरचना, दक्षिण एशियाई, विकासशील, धार्मिक, जातिवाद, क्षेत्रितावाद, आर्थिक-विषमता, आरक्षण, वर्ग राजनीति, सहभागिता, उच्च वर्ग, पिछड़ा वर्ग, मध्य वर्ग, पंचवर्षीय योजना, नारी शक्ति, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, न्यू इंडिया विज़न ।

1. प्रस्तावना

भारत, एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष एवं लोकतांत्रिक देश है। भारत का राजनीतिक विकास स्वाधीनता के बाद से एक जटिल और गतिशील प्रक्रिया से गुजरा है।

ऐतिहासिक आधार,संवैधानिक विकास, विशेषताएं, संशोधन, महत्वपूर्ण प्रावधान, बुनियादी संरचना तथा संवैधानिक ढांचों के समृद्ध इतिहास में निहित भारत की राजनीतिक यात्रा उन मिल के पत्थरो की विशेषता रही है, जिन्होंने इसके शासन संरचना और लोकतांत्रिक संस्थाओं को मूर्त रूप प्रदान किया है। भारतीय संविधान के प्रारूपण से लेकर नियमित आम चुनावो के संचालन तक, आपातकालीन शासन की चुनौतियों से लेकर, आर्थिक उदारीकरण को अपने तक, भारत के राजनीतिक विकास का परिदृश्य लोकतांत्रिक सिद्धांतों, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक सतत विकास को दर्शाता है। फिर भी भारत के राजनीतिक विकास के मार्ग में अनेक रूकावटों का भी सामना देखने को प्राप्त होता है जैसे भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, क्षेत्रितावाद, जातिवाद, आरक्षण तथा समाज की आर्थिक विषमता जैसे लगातार मुद्दे भारतीय लोकतांत्रिक मूल्यों में बाधाए प्रकट करती हैं। इनके समाधान

हेतु राजनीतिक विकास के परिप्रेक्ष्य में लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत एवं पारदर्शिता को बढ़ाने के लिए नागरिकों की सहभागिता और जागरूकता की आवश्यकता है।

सामान्यतः राजनीतिक विकास से तात्पर्य उन प्रक्रियाओं और परिवर्तनों से है जिनके माध्यम से किसी समाज की स्थानीय या राष्ट्रीय स्तर तक राजनीतिक व्यवस्था में विकास और परिवर्तन होता है। इसमें राजनीतिक संस्थाओं, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शासन संरचना के सर्वांगीण क्षेत्र में बदलाव शामिल है। राजनीतिक विकास एक बहुआयामी अवधारणा है जो सकारात्मक परिवर्तन लाती है। प्रस्तुत शोध में भारत के राजनीतिक विकास प्रक्रिया पर प्रकाश डाला जा रहा हैं।

2. साहित्य की समीक्षा

1. **डब्लू०एच०मोरिस जोन्स** ने अपनी पुस्तक "दी गवर्नमेंट एण्ड पॉलिटिक्स इन इण्डिया"(1964) में भारतीय सरकार और राजनीति में सरकार और आन्दोलन पर प्रकाश डाला है।
2. **रजनी कोठारी** द्वारा रचित ग्रंथ " कास्ट एंड पॉलिटिक्स इन इंडिया"(1970) में भारतीय राजनीति में जाति की महत्ता को दर्शाया है।
3. **जे०आर०सिवाच** ने अपनी पुस्तक "डायनामिक्स ऑफ इंडियन गवर्नमेंट एण्ड पॉलिटिक्स"(1985)में भारतीय सरकार और राजनीति की गतिशीलता को बताया है।
4. **रजनी कोठारी** की एक अन्य महत्वपूर्ण रचना "पॉलिटिक्स इन इंडिया"(1970) में इन्होंने भारतीय राजनीति के बारे में बताया है।
5. **लूसियन पाई** ने अपनी पुस्तक "एस्पेक्ट्स ऑफ पॉलिटिकल डेवलपमेंट" में राजनीतिक विकास के चरणों की व्याख्या की है।
6. **अमर्त्य सेन** ने अपनी पुस्तक "फ्रीडम एज़ डेवलपमेंट" में राजनीतिक विकास और सामाजिक-आर्थिक प्रगति के बीच अंतरसंबंध की पड़ताल की है और मानव विकास को बढ़ावा देने में स्वतंत्रता और क्षमताओं के महत्व पर जोर दिया है।
7. **रामचंद्र गुहा** ने अपनी पुस्तक "इंडिया आफ्टर गांधी": "ए हिस्ट्री ऑफ द वर्ल्ड् सलार्जेस्ट डेमोक्रेसी" में, लोकतांत्रिक संस्था, राजनीतिक दलों और सामाजिक आर्थिक चुनौतियों के विकास का पता लगाते हुए भारत की राजनीतिक यात्रा का एक व्यापक अवलोकन प्रदान करतेहैं।

3. शोध समस्या

भारतीय राजनीतिक विकास को सुचारू रूप से संचालित होने के मार्ग में बहुत सारी समस्याएं और चुनौतियां हैं ग्रामीण क्षेत्र के संदर्भ में राजनीतिक विकास और कमियां-

1. जातिवाद का भारतीय राजनीति पर गहरा प्रभाव हैं।
2. वर्ग राजनीति, दलित मुद्दे और आरक्षण का प्रावधान ऐसे घटक है जिसने राष्ट्रीय एकीकरण की समस्या को बढ़ाया है
3. क्षेत्रीतावाद भी एक बड़ी समस्या हैं।
4. महिलाओं की राजनीति में सहभागिता का कम होना लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए ठीक नहीं हैं।

4. शोध का उद्देश्य

1. भारत की राजनीतिक विकास प्रक्रिया के ऐतिहासिक विकास की जांच करना और उन प्रमुख घटनाओं और प्रभावों

2. का पता लगाना, जिन्होंने इसकी लोकतांत्रिक यात्रा को आकार दिया है।
3. संविधान, चुनावी प्रक्रियाओं, राजनीतिक दलों और संघीय संरचनाओं की भूमिका सहित भारत के राजनीतिक परिदृश्य को नियंत्रित करने वाले संस्थागत ढांचे और तंत्र का विश्लेषण करना।
4. भारत में राजनीतिक विकास प्रक्रिया में आनेवाली चुनौतियों और बाधाओं, जैसे भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, जाति-आधारित क्षेत्रीय-आधारित महिला तथा आरक्षण संबंधित राजनीती, का आकलन करना।

5. शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध के लिए मुख्यतः इन चार अध्ययन पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। एतिहासिक अध्ययन विधिः इस अध्ययन विधि में भूतकालीन अनुभवों से वर्तमान पर विचार किया जाता है। विश्लेषणात्मक अध्ययन विधिः इसमें विश्लेषण करके निष्कर्षों को प्राप्त किया जाता है। तुलनात्मक अध्ययन विधिः इसमें तथ्यों का आपस में तुलना करके निष्कर्षों को प्राप्त किया जाता है। अगनात्मक अध्ययन विधि (वैज्ञानिक विधि):- इस अध्ययन विधि में अध्ययन के स्वरूप का निर्धारण तथ्यों के संग्रह से होता है। इसमें अनुसंधानकर्ता विभिन्न तर्थों को एकत्रित करता है फिर उन तर्यो का विश्लेषण करता है या तर्थों का तुलनात्मक अध्ययन करता है, उनका वर्गीकरण करता है तथा उसके बाद किसी निष्कर्ष पर पहुँचता है जिससे वह कुछ निश्चित सिद्धान्ता को जन्म दे सकता है।

शोध प्रविधि के रूप में मुख्यतः भारत की राजनीतिक विकास के बारे जानने के लिए तथ्यों का संग्रह द्वितीयक श्रोतों से किया है, कुछ विचार मूल श्रोतों से भी मिल गये हैं। मुख्यतः प्राथमिक श्रोतों, द्वितीयक श्रोतों, समाचार पत्री, पत्रिकाओं, शोध पुस्तकों से किया है।

6. भारत के संदर्भ में राजनीतिक विकास

राजनीतिक विकास को साधारण तौर पर विकास की अवधारणा से संबंधित करके यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि राजनीति के क्षेत्र में आगे बढ़ना ही राजनीतिक विकास है।अतः यह प्रगति का सूचक है इसे राजनीतिक परिवर्तन भी कहा जाता है। राजनीतिक विकास की अवधारणा को सबसे पहले व्यवस्थित व वैज्ञानिक विश्लेषण लूसियान पाई द्वारा अपनी पुस्तक "एस्पेक्ट्स आफ पॉलीटिकल डेवलपमेंट 1966" में किया गया।

लूसियान पाई- "राजनीतिक विकास, संस्कृति का विसरण और जीवन के पुराने प्रतिमानों को नई मांगों के अनुकूल बनाने उन्हें उनके साथ मिलने या उनके साथ तालमेल बैठना है।

अल्फ्रेड डायमेंट- "राजनीतिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक राजनीतिक व्यवस्था के नए प्रकार के लक्ष्यों को निरन्तर सफल रूप में प्राप्त करने की क्षमता बनी रहती है।"

भारत में समग्र स्तर पर विकास में नाटकीय वृद्धि के बावजूद, स्थानीय स्तर पर विकास के परिणामों में काफी भिन्नता है। सार्वजनिक वस्तुओं का वितरण भ्रष्टाचार और अकुशलता के कारण बाधित होती है, और कुछ गाँवों में कुछ भी नहीं किया जाता है, जबकि अन्य में विकास परियोजनाएँ योजना के अनुसार कार्यान्वित की जाती हैं। कार्यान्वयन में इस भिन्नता का श्रेय राजनेताओं और नौकरशाहों को दिया जा सकता है, जो कुछ क्षेत्रों को दूसरों की तुलना में अधिक प्राथमिकता देते हैं। अक्सर यह माना जाता है कि भारत में राजनेता सह-जातीयता के लिए अधिक काम करते हैं।

असमान सार्वजनिक वस्तुओं का वितरण राजनीतिक प्रोत्साहनों से प्रेरित है, और राजनेता शायद उन गांवों के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं जिन्होंने उन्हें वोट दिया है, जहां अधिक मतदान होता है, या प्रतिस्पर्धी हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका, भारत और नॉर्वे के तीन सहयोगी भागीदारों के डेटा प्रयासों को मिलाकर, हम भारत के ग्राम-स्तरीय डेटा पर इन दावों का परीक्षण करने का इरादा रखते हैं। पूरे भारत में विकास में भिन्नता और राजनीतिक अभिनेताओं को क्या प्रेरित करता है, इस पर चर्चा में योगदान देगा।

- **जाति और भारतीय राजनीति**

भारत में राजनीतिक आधुनिकीकरण के प्रारंभ होने के बाद यह धारणा विकसित हुई कि पश्चिमी ढंग में राजनीतिक संस्थाएँ और लोकतंत्रात्मक मूल्यों को अपनाने के फलस्वरूप पारम्परिक संस्था जातिवाद का अन्त हो जाएगा किंतु आजादी के बाद भारत की राजनीति में जाति का प्रभाव अनवरत रूप से बढ़ता गया। जहाँ सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में जाति की शक्ति घटी है वहाँ राजनीति और प्रशासन पर इसके बढते हुए प्रभाव को राजनीतिज्ञों, प्रशासनाधिकारियों और केन्द्र एवं राज्य सरकारों ने स्वीकार किया है।

1. **जाति का राजनीति से संपर्क सूत्र**- प्रो० रुडोल्फ के शब्दो में, 'भारत के राजनीतिक लोकतंत्र के संदर्भ में जाति वह धूरी है जिसके माध्यम से नवीन मूल्यों और तरिको की खोज की जा रही है।" यथार्थ में यह एक ऐसा माध्यम बन गयी है कि इसके जरिए भारतीय जनता को लोकतान्त्रिक राजनीति की प्रकिया से जोडा जा सकता है। स्वाधीनता संग्राम के दौरान ऐसा दिखाई देता था कि जनता पर जातिवाद का प्रभाव कम हो रहा है किंतु आजादी के बाद जातिवाद में फिर जोर पकड़ा और वयस्क मताधिकार व्यवस्था को देश में लागू कर दिए जाने के परिणामस्वरुप यह एक राजनीतिक शक्ति के रूप में उदित हुआ।
2. **जाति और राजनीति में अंत:क्रिया का सैद्धान्तिक आधार**-भारत में जाति और राजनीति में किस प्रकार का सम्बन्ध है। इस संबंध मे निम्न विचार प्रस्तुत किए जा रहे है-
    1. राजनीति के प्रभाव के फलस्वरूप जाति नया रूप धारण कर रही है। लोकतांत्रिक राजनीति के अंतर्गत राजनीति की प्रक्रिया प्रचलित जातीय संरचनाओं को इस प्रकार प्रयोग में लाती है जिससे सम्बद्ध पक्ष अपने लिए समर्थन जुटा सके तथा अपनी स्थिति को सुदृढ़ बना सके। जिस समाज में जाति को सर्वाधिक महत्वपूर्ण संगठन माना जाता है उसमे यह अत्यंत स्वाभाविक है कि राजनीति इस संगठन के माध्यम से अपने आपको संगठित कसे का प्रयास करें। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि जिसे हम राजनीति में जातिवाद के नाम से पुकारते है वह वास्तव में जातिका राजनीतिकरण है।
    2. भारत में राजनीति जाति के इर्द-गिर्द घूमती है जाति प्रमुखतः राजनीतिक दल है।यदि मनुष्य राजनीति की दुनिया में ऊंचा उठाना चाहता है तो उसे अपने साथ अपनी जाति को लेकर चलना होगा भारत में राजनीतिक जातीय समुदायों को इसलिए संगठित करते हैं ताकि उनके समर्थन में उन्हें सत्ता तक पहुंचने में सहायता मिल सके।
    3. जातियां संगठित होकर प्रत्यक्ष रूप से राजनीति में भाग लेती है और इस प्रकार जातिगत भारतीय समाज में जातिया ही राजनीतिक शक्तियां बन गई हैं।
3. **भारतीय राजनीति में "जाति" की भूमिका**- जातिय व्यवस्था भारतीय समाज का एक परंपरागत तत्व है भारत के नए संविधान में लागू होने से वयस्क मताधिकार के आधार पर देश में चुनाव आरंभ हुए और जाति संस्थाएं महत्वपूर्ण बन गई क्योंकि उनके पास भारी संख्या में मत थे और लोकतंत्र में सत्ता प्राप्त करने के लिए मतों की आवश्यकता है इस इस कारण से धीरे-धीरे राजनीति में जातिवाद की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण होती गई।

- **राजनीतिक दलों का गठन जाति के आधार पर**
- राजनीतिक नेतृत्व
- चुनाव में उम्मीदवारों का चयन
- जाति तथा मतदान व्यवहार
- जातियों के नाम पर आरक्षण
- जाति एवं प्रशासन
- पंचायती राज तथा जातिवाद

- सरकार के निर्माण में जातिवाद का प्रभाव, निर्णय प्रक्रिया में जाति की भूमिका। जाति आधुनिकीकरण के मार्ग में बाधक न हो यह तथापि राजनीति में जाति का हस्तक्षेप लोकतंत्र की धारणा के प्रतिकूल है। जातिवाद देश, समाज और राजनीति के लिए बाधक है। यह पृथकता वादी दृष्टि राष्ट्रीय एकता के लिए अत्याधिक घातक है।

7. वर्ग राजनीति

विश्व के सभी समाजों में वर्ग पाए जाते हैं। पुरातन काल से ही आयु, लिंग, शिक्षा आय,व्यवसाय होता रहा है। समान सामाजिक परिस्थिति वाले व्यक्ति समूह को वर्ग कहेंगे। जब जन्म को छोड़कर अन्य किसी भी आधार पर समाज को विभिन्न समूहों में विभाजित कर दिया जाता है तो उनमें से प्रत्येक समूह को हम सामाजिक वर्ग कहते हैं। जैसे पूंजीपति वर्ग, मजदूर वर्ग, शिक्षक वर्ग आदि।

भारत में वर्ग राजनीति का स्वरूप- जाति की भांति भारतीय समाज में भिन्न-भिन्न वर्ग पाए जाते हैं सारे भारतीय राजनीति को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं-अगड़े वर्ग(Higher Class)उच्च वर्ग की संज्ञा दी जाती हैं।इसमे ब्राह्मण, राजपूत, वैश्य, नाडार और व्यायस्थ वर्गों को शामिल किया जाता है। इन्हें स्वर्ण वर्ग के रूप में जाना जाता है। सामन्तो, जागीरदारों, पूंजीपतियों, उद्योगपतियों तथा बड़े किसानों, व्यापारियों और धार्मिक महन्तो को इस वर्ग में रखा जाता है। इन वर्गों का अल्पसंख्या में होने के बावजूद देश की राजनीति, व्यवसाय ,प्रशासन तथा देश के संसाधनों पर प्रभुत्व रहा है। राजनीतिक दलों द्वारा भी इन्हीं वर्गों के हितों की पूर्ति की दिशा में ही कार्य किया जाता रहा है। जब पिछड़े और निम्न वर्गों ने इनके प्रमुख को चुनौती देने अथवा इनके स्वार्थो पर चोट करने का प्रयास किया तो इस अगड़े वर्ग ने उन्हें कुचलने हेतु उन पर अत्याचारों का कहर बरसाया है।

अंग्रेजी शासन के दौरान अंग्रेजी शिक्षा के परिणामस्वरुप भारत में 'मध्य वर्ग'(Middle Class)का उदय हुआ इस वर्ण की समान भाषा तथा समान विचार थे। इसमें अध्यापक, इंजीनियर, वकील तथा डॉक्टर प्रमुख थे।वर्तमान राजनीति में यह भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

हमारे देश की जनसंख्या का लगभग 70% भाग अनुसूचित जातियों, जनजातियों ,पिछड़े वर्गों का है। इन्हें सामान्यतः पिछड़े वर्ग की संज्ञा दी जाती है। पिछड़े वर्गों को आर्थिक विपन्नता, सामाजिक अन्याय और राजनीतिक पिछड़ेपन के साथ ही गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी, दरिद्रता,आर्थिक विपन्नता तथा आर्थिक अभावो का सामना भी करना पड़ रहा है। यह वर्ग सामाजिक अन्याय, अत्याचार उत्पीड़न तथा सामाजिक दृष्टि से हीनता की मनोदशा से ग्रसित है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए अनेक कदम उठाए गए हैं।देश में जमींदारी और जागीरदारी प्रथा का उन्मूलन किया गया है राज्यों द्वारा भूमि सुधार कानून को लागू करके खेतीहर श्रमिकों को उनके आर्थिक उत्थान और कल्याण के लिए भी विभिन्न प्रकार के आरक्षणों के माध्यम से इन वर्गों को सरकारी योजनाओं व सेवाओं में उचित प्रतिनिधित्व और पदोन्नति व्यवस्था लागू करने के प्रयास किए गए हैं। देश की राजनीति में इन वर्गों का समुचित प्रतिनिधित्व हो इसके लिए पंचायती राज संस्थाओं में आरक्षण की व्यवस्था की गई है। सभी राजनीतिक दल पिछड़े वर्गों में अपना जनाधार सशक्त करने के लिए इन वर्गों को अपने पक्ष में करने के लिए प्रयत्नशील हैं। राष्ट्रीय राजनीति दलों में डॉक्टर भीमराव अंबेडकर को राष्ट्रीय नेता के रूप में सम्मान प्रदान करने और उनके विचारों का प्रचार करने के फोड़ लगी हुई है।

संक्षेप में, भारत के गांवो एवं शहरों में अलग वर्ग पाए जाते हैं जहां गांव में वर्गों का संबंध भू स्वामित्व कृषि एवं जाति से जुड़ा हुआ है वहीं शहरों में व्यापार एवं औद्योगीकरण से। इस संबंध में **माइकल यंग** ने लिखा है "भूमि ने जाति को एवं मशीन ने वर्गों को जन्म दिया है।" अंत में यह कहा जा सकता है की विशेष रूप से अगड़े पिछले वर्गों के आपसी समन्वय, सहयोग और सद्भावना पर देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था का भविष्य सुरक्षित रह सकता है।

8. दलित मुद्दे एवं आरक्षण का प्रावधान

कुछ विद्वान दलित राजनीति की जड़े संविधान में दिए गए आरक्षण के प्रावधानों में निहित मानते हैं।शुरू से ही आरक्षण की व्यवस्था विवाद का विषय रही है यद्यपि दलित,पिछड़े आदि के आरक्षण के लिए एकमात्र उद्देश्य यह था कि इन वर्गों का समुचित विकास किया जाए ताकि वे वर्ग अन्य उच्च वर्गों के समान ही सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर सके। वास्तविकता तो यह है कि आरक्षण की व्यवस्था ने भारतीय समाज को राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक इत्यादि प्रत्येक दृष्टि से प्रभावित किया है।आरक्षण की व्यवस्था ने भारतीय समाज पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही प्रभाव डाले हैं।

सकारात्मक प्रभाव- 1. सामाजिक स्तर में सुधार 2. राजनीतिक भागीदारी बड़ी है 3. राजनीतिक चेतना में वृद्धि 4. कमजोर वर्गों में शिक्षा के प्रति जागृति आई है 5. कमजोर वर्ग समाज की मुख्य धारा से जुड़ पाए हैं 6. कमजोर वर्गों का आर्थिक विकास होना 7. लोक सेवाओं में पिछड़े वर्गों, अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों को प्रतिनिधित्व बढ़ना।

नकारात्मक प्रभाव- 1. प्रशासन में जातिवाद को बढ़ावा मिलना 2. आरक्षण के कारण मतदान व्यवहार पर प्रभाव पड़ना 3. पिछड़े वर्गों का वोट बैंक के रूप में प्रयोग 4. आरक्षण का विरोध 5. लोक सेवाओं के स्तर का पतन 6. निम्न वर्गों की सरकार पर निर्भरता बढ़ाना।

9. महिलाओं की स्थिति और विकास

20वीं शताब्दी में महिलाओं और समाज के दलित वर्गों ने समानता के लिए संघर्ष को अंतरराष्ट्रीय रूप देकर लिंग भेद से संबंधित अन्य के खिलाफ आवाज उठाई। ये मुद्दे भारत में पहले राष्ट्रीय आंदोलन के एक भाग के रूप में और आजादी के बाद विकास के रूप में आए।

महिलाओं का विकास करने और उन्हें न्याय दिलाने के लिए किए गए प्रयास केवल कानून बनाने और कानून की उनके पक्ष में व्याख्या करने तक की सीमित नहीं है इस बात को भी मान्यता दी गई है और महसूस किया गया है कि महिलाओं की शिक्षा दक्षता-विकास प्रबंध जैसे निवेशों तक पहुंच भी होनी चाहिए। इसके लिए सरकार द्वारा महिला विकास को पंचवर्षीय योजनाओं में शामिल करने का प्रयास किया गया।

महिलाओं के विकास से संबंधित दृष्टिकोण को प्रथम पंचवर्षीय योजनाओं में समुदाय विकास कार्यक्रम के अंतर्गत शामिल किया गया। तृतीय एवं चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में महिला शिक्षा कल्याण को उच्च प्राथमिकता दी गई। पांचवी पंचवर्षीय योजना में महिला कल्याण दृष्टिकोण से हटकर महिला विकास पर केंद्रित किया गया। छठी पंचवर्षीय योजना में महिला स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार पर बल दिया गया।

भारत सरकार ने 2024 25 के बजट में महिलाओं के विकास और कल्याण पर खर्च को पिछले साल के मुकाबले 38.7% बढ़ा दिया है। जेंडर बजट स्टेटमेंट के अनुसार 2024-25 में 45 मंत्रालयों/विभागों/केंद्र शासित को 2023-24 की तुलना में आवंटन 38.6 प्रतिशत बढ़ा हैं।

आज शासन-प्रशासन के ढांचे में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। राष्ट्रपति द्रोपति मुर्मू उनकी आदिवासी पहचान राष्ट्रपति के पद को और भी गौरवशाली बनती है। महिलाओं के जीवन में अभूतपूर्व सुधार हुए हैं जैसे 11 करोड़ से अधिक शौचालय का निर्माण 30.64 करोड़ मुद्रा लोन के वितरण और उज्ज्वला योजना के तहत गरीबी रेखा से नीचे वाली 10.1 करोड़ महिलाओं को गैस कनेक्शन उपलब्ध होना। हालिया बजट घोषणाओं के अनुसार 36 लाख आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं सहायिकाओं और आशा कार्यकर्ताओं को आयुष्मान भारत योजना के दायरे में लाया गया है।यह सभी सामाजिक वर्गों की महिलाओं के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। महिलाओं के लिए विधायिका में 33% सीट आरक्षित करना और महिलाओं की समान भागीदारी को बढ़ावा देने और अनुच्छेद 370 को समाप्त कर संपूर्ण राष्ट्र को एकजुट करने की और प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

महिलाओं के नेतृत्व में विकास केवल जटिल योजनाओं तक सीमित न होकर राष्ट्र की प्रगति गाथा की नींव रखने वाला है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ पल को सफलऔर महिलाओं की सम्मान भागीदारी सुनिश्चित किया जाना दर्शाता है की न्यू विज़न मे नारी शक्ति की उपस्थिति को अभूतपूर्व महत्व दिया जा रहा है।

10. क्षेत्रीयतावाद

क्षेत्रीयतावाद में भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को बहुत अधिक प्रभावित किया है **डॉ इकबाल नारायण** का कथन है "भारतीय राजनीति का एक प्रमुख निर्धारक तत्व क्षेत्रियवाद है जिसके कारण लोग भारतीय संघ की तुलना में उसे क्षेत्र या राज्य विशेष को महत्व देते हैं जिसमें वह रहते हैं"

क्षेत्रवाद का अर्थ किसी क्षेत्र के लोगों की उस भावना एवं प्रयत्नों से है जिनके द्वारा वे अपने क्षेत्र विशेष के लिए आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक शक्तियों में वृद्धि चाहते हैं। क्षेत्रीयतावाद राष्ट्रीयता की वृहद भावना का विलोम है और इसका ध्येय संकुचित स्वार्थी की पूर्ति होना है भारतीय राजनीति के संदर्भ में यह एक ऐसी धारणा है जो भाषा,धर्म, क्षेत्र आदि पर आधारित है और जो विघटनकारी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देती है। क्षेत्रीयता की भावना सारे देश में व्याप्त है जो कि प्रायः सुनियोजित एवं सुव्यवस्थित आंदोलन तथा अभियानों के रूप में प्रकट होती है।

भारतीय राजनीति में क्षेत्रीयतावाद की चर्चा निम्नलिखित शीर्षकों के आधार पर की जा सकती है-

1. भारतीय संघ से पृथक होने की मांग

- तमिलनाडु में आंदोलन
- पंजाब आंदोलन
- मिजोआंदोलन
- नागालैंड आंदोलन
- आजाद कश्मीर की मांग

2. पृथक राजस्व को प्राप्त करने की मांग

- गोरखालैंड आंदोलन
- बोडो आंदोलन
- झारखंड आंदोलन
- पूर्ण राज्यत्व को प्राप्त करने की मांग
- अंतरराज्य विवाद राज्य के लोगों के हितों की रक्षा के लिए आंदोलन।

क्षेत्रीय आंदोलन को चलाने के लिए आर्थिक विषमता धर्म जाति और भाषा का सहारा लिया गया यथार्थ में क्षेत्रीयता की समस्या आज भारत की राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बड़ी बाधा है अतः हमें संघर्षात्मक प्रदेशिकता की भावना को समाप्त कर उधर सहयोगी प्रदेशिकता की भावना के प्रसार की आवश्यकता है।

11. निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में, जहाँ एक ओर भारत की राजनीतिक विकास प्रक्रिया ने जीवंत लोकतंत्र के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की है, वहीं दूसरी ओर भ्रष्टाचार, सामाजिक-आर्थिक विषमताएँ और शासन की अक्षमताएँ जैसे मुद्दों के समाधान के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है। लोकतांत्रिक संस्थाओं, समावेशी शासन और नागरिक भागीदारी को बढ़ावा देकर भारत अधिक उत्तरदायी और बेहतर राजनीतिक व्यवस्था की ओर अपने मार्ग पर आगे बढ़ सकता है। राजनीतिक विकास के मामले में, विशेषकर विचारकों द्वारा दिए गए समानता, क्षमता और विभेदीकरण के मॉडल अभी भी हमारी व्यवस्था में फिट नहीं बैठ रहे हैं। इस पर प्रयास किए जा रहे हैं। ऐसा लगता है कि इसे प्राप्त

करने में हमें कई वर्ष लग जाएँगे। राजनीतिक व्यवस्था के तहत, कई माँगें उठाई जाती हैं। समर्थन भी मिलता है, लेकिन निर्णय लेने और नीतियाँ बनाने में समय लगता है। यानी एक समस्या का समाधान होने से पहले ही दूसरी समस्या खड़ी हो जाती है। अगर सरकार छोटी-छोटी समस्याओं का भी समाधान करने लगे, तो वह दिन दूर नहीं जब भारत एक बार फिर सोने की चिड़िया बन जाएगा। भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह सरकार के सकारात्मक दृष्टिकोण और नीतियों का पूर्ण समर्थन करे और राष्ट्रवाद की भावना रखे। यदि प्रत्येक नागरिक ईमानदारी से कर का भुगतान करे और सरकार भी राज्यों के बीच उसका उचित वितरण करे तो किसी भी प्रकार के विवाद की संभावना नहीं रहेगी।

12. संदर्भ सूची

1. डब्ल्यू०एच० मोरिस जोन्स, दा गर्वनमैन्ट एण्ड पॉलिटिक्स इन इण्डिया, बी०आई० पब्लिकेशन, 1974, दिल्ली
2. डी०डी० बसु, 'एन इन्ट्रोडक्शन टू दा कान्स्टीट्यूशन ऑफ इण्डिया", पैनटिश हॉल प्रैस, नई दिल्ली, 1994 ग्रेनविल आस्टिन, 'इण्डियन कान्स्टीट्यूशन", ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1966
3. रजनी कोठारी, "पॉलिटिक्स इन इण्डिया", ओरियण्ट लान्गमैन प्रा०लि०, नई दिल्ली, 1970
4. रजनी कोठारी, "कॉस्ट एण्ड पॉलिटिक्स इन इण्डिया, ओरियण्ट लान्गमैन प्रा०लि०, नई दिल्ली, 1970
5. वी०पी० मेनन्, "दा ट्रास्फर ऑफ पॉवर इन इण्डिया, प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1957
6. जे०आर० सिवाच, डायनामिक्श ऑफ इण्डियन गर्वनमेन्ट एण्ड पालिटिक्स, स्र्स्टलिंग पविल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1985
7. रजनी कोठारी, स्टेट एण्ड नेशनल बिल्डिंग", एलाईड पब्लिशर्स, बाम्बे, 1976
8. सी०पी० भाम्मरी, दा इण्डियन स्टेट फिफटी ईयरस, सिप्रा, नई दिल्ली, 1999
9. के०आर० बाम्बवाल, "दा फॉउडेशन ऑफ इण्डियन फैडरलिज्म, एशिया पब्लिशिंग हाऊस, बाम्बे, 1967
10. अतुल कोहली, "डेमोक्रेशी एण्ड डिशकनटेन्ट इण्डियाज ग्रोईग क्राईशिश ऑफ गर्वनएबिलिटि", कैम्ब्रिजयुनिवर्सिटी प्रैस, कैम्ब्रिज, 1991
11. अब्बास, "इण्डियन गर्वनमेण्ट एण्ड पॉलिटिक्स, पिर्यसन, नई दिल्ली, 2012
12. प्रवीन कुमार झा, तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में भारतीय राजनीति" पिर्यसन, नई दिल्ली, 2012